

मेरे दादा फेर्दिनान्दो

मैं सुबह से अपनी मेज़ पर बैठा था — वह करने का एक तरीका जो मैं चाहता था, न कि जो मुझे करना पड़ता। एक ऐसी दुनिया में खुश रहने का एक तरीका जिसके ठहरने की अवधि अभी तय नहीं हुई थी।

एक किताब पढ़ने, वेब पर एक लेख, किसी दोस्त का फोन कॉल, डाकिया घंटी बजाता, और मेरी पत्नी मुझे किराने की थैलियाँ लाने के लिए कार तक बुलाती — इन सबके बीच बहुत सारे कॉल सेंटर मुझे फोन करने में दिलचस्पी रखते हैं। और मैं उन्हें चौंका देता हूँ, क्योंकि मैं उनके अनुरोध को प्रेरणा पर टाल देता हूँ। जब मैं उन्हें बताता हूँ कि मैं गरीब हूँ तो उन्हें मुझ पर तरस आता है। महिलाएं मेरे लिए कुछ करना चाहती हैं — पर उन्हें नहीं पता कि मुझे बिना बेचे लेना सिखाया गया था। केवल डिप्लोमा वाले एक आदमी से मिला विश्वविद्यालय का पाठ।

और इस सबके बीच संगीत है — न्यूयॉर्क, मैनहटन, अंग्रेज़ी-भाषी संगीत — फिर मेरे अपने सालों के संगीत की ओर बढ़ते हुए, और शास्त्रीय संगीतकारों पर ख़त्म होते हुए: मोत्सार्ट, शोपॉ, विवाल्डी और बीथोवन। फिर maestro एन्नियो मोरिकोने की रचनाओं में शांति पाते हुए।

आज इन्हीं में से एक रचना के भीतर मुझे मैंडोलिन मिला — मेरे दादा का पसंदीदा वाद्य। उन्हें छह साल की उम्र में एक मिला था और उन्होंने नब्बे से अधिक सालों तक इसे कान से बजाना सीखा, बिना संगीत पढ़े या आठ Amazon पर कोर्स खरीदे। उनका एकमात्र जुनून वह सेरेनेड थे जो वे महिलाओं के लिए बजाते थे — यहाँ तक कि फ़रमाइश पर बनाए गए भी।

फ्रेगा परिवार का एक जीवन, जिसमें कच्चा माल कभी पैसा नहीं रहा — केवल वह करने का सुख जिसके लिए हम पैदा हुए: भुलाए न जाने का।

नान्दो

Ferdinando Frega — gillettenarrative.com